

पद ८६

(राग: जोगिया - ताल: धुमाळी)

गुज गुज गुज गुज आहे रे बा । हें संत मुखीं तुज कळेल बा ॥१॥
एक चिदाकाश आहे रे बा मग मायिक गारुड रचिलें रे बा । तिथें
अनंत शरीरें दिसती रे बा । शुध्द सत्त्व रज तामस बा । देहीं अहंपण

मीपण बा । हेंचि जिवासी जीवपण बा ॥२॥ कोण बद्ध कोण
मुक्त रे बा । भूत (तत्त्व) जाल जग नटलें रे बा । तम विलास बंध
रे बा । शुध्द सत्त्वगुण मोक्ष रे बा । बंध दुःख ब्रह्मानंद बा । स्वरूपीं
हे मल (स्वस्वरूपीं हे) नाहीच बा ॥३॥ मोहरात्र ही सरली रे बा ।
चिन्मार्ताण्डोदय झाला रे बा । नित्यमुक्त हें विश्व रे बा । नित्यमुक्त
आम्हीं ब्रह्म रे बा । माया शब्द हे नाहीच बा । आदि अंती गुरु
अवधूत बा (घन अखंड एक गुरु अवधूत बा) ॥४॥